



# भारत का राजपत्र

## The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

\* Mad  
11/6/99

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 132 ]

No. 132]

नई दिल्ली, भुहस्तिवार, जून 10, 1999/ज्येष्ठ 20, 1921  
NEW DELHI, THURSDAY, JUNE 10, 1999/JYAISTHA 20, 1921

वाणिज्य मंत्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 9 जून, 1999

विषय :—रूस से पॉलीट्राफ्लूरोएथलीन के आयातों के संबंध में पाटनरोधी जाँच—आरंभिक निष्कर्ष।

24/1/98/डीजीएस.—कस्टम ट्रैफ अधिनियम, 1975 और उसकी कस्टम ट्रैफ प्रॉटोकॉलों पर लगाप गए प्राटनरोधी सीमाशुल्क की पहचान, आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण ॥ नियमाबली, 1995 को ध्यान में रखते हुए :-

क. पद्धति

-----

1. जाँच के लिए निम्नलिखित पद्धति का पालन किया गया है :-

i) नामानिर्दिष्ट प्राधिकारि ॥जिसे इसमें इसके बाद प्राधिकारी कहा गया है॥ ने उक्त नियमों के अधीन, मैसर्स हिन्दुस्तान फ्लूरोकार्बन्स लिमिटेड, हैदरबाद से एक लैखित यांचिक प्राप्त की है जिसमें रूसी मूल के या बढ़ान से निर्यात किये गए पॉलीट्राफ्लूरोएथलीन ॥पीट्रोफ ई॥ के पाटन का आरोप लगाया गया है।

ii) यांचिक की आरंभिक जाँच से कठिनप्य त्रुटियों का पता लगा जिन्हें बड़ी बरा बाद में ठीक कर दिया गया है। इसके बाद यांचिक को सही दस्तावेज माना गया है।

- iii) वारी बरा प्रस्तुत किये गए पर्याप्त साक्षों के आधार पर प्राधिकरि ने रूसी मूल के या वहाँ से नियतित पीवीपफई के आरोपित पाटन आयतों की जांच आरंभ करने का निर्णय किया। प्राधिकरि ने नियमावली के उपनियम ५॥३॥ के अनुसार जांच की कार्यवाही शुरू करने से पहले, पाटन के आरोप के प्राप्त होने की सुव्यवस्था विषयगत देश के दूतावास को दी।
- iv) प्राधिकरि ने सीमाशुल्क अधिनियम, 1975 के अध्याय 39, शीर्ष संख्या 3904-61 के अन्तर्गत वर्गीकृत ईटीपफई के आयतों के संबंध में पाटनरेशी जांच आरंभ करते हुए एक सार्वजनिक सूचना 22 जनवरी, 1999 को भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित की।
- v) प्राधिकरि ने सार्वजनिक सूचना की एक प्रति उन सभी ज्ञात नियतिकों (मिनक) व्यापार वारी बरा और भारत में रूस के दूतावास बरा उपलब्ध करप गए थे। तथा उधोग संघों को भेजी और उन्हें पत्र की तारीख से 40 दिनों के भीतर अपने विचार लिखित रूप में देने का अवसर प्रदान किया।
- vi) प्राधिकरि ने सार्वजनिक सूचना की एक प्रति पीवीपफई के ज्ञात आयतों(मिनक) विवरण वारी बरा उपलब्ध करया गया था। को भेजी और उनसे पत्र की तारीख से 40 दिनों के भीतर विस्तृत विवरण उपलब्ध कराने का अनुरेष किया।
- vii) केन्द्रीय उत्पाद एवं सीमाशुल्क बोर्ड (सीबीईसी) से पीवीईप के आयत का विस्तृत विवरण उपलब्ध करने का अनुरेष किया गया था।
- viii) प्राधिकरि ने पूर्वोक्त नियम ६॥३॥ के अनुसार ज्ञात नियतिकों और विषयगत देश के दूतावास को याचिक की प्रतियाँ उपलब्ध कराई।
- ix) प्राधिकरि ने नियम ६॥४॥ के अनुसार मैं अपेक्षित जानकारि प्राप्त करने के लिए रूस के निम्नलिखित ज्ञात नियतिकों को एक प्रश्नावली भेजी:

० मैसर्स हैलोगिन ज्वाहंट स्वैंक कम्पनी,

यू झर्स, लासविंस-क्लया, ९८

पर्म

रूसी फेडरेशन ६१४११३

नियंत्रिक ने निष्पारित प्रपत्र में प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया। तबाप, उन्होंने प्राधिकारी को 1 अप्रैल, 1999 को एक पत्र लिखा है जिसमें उन्होंने वर्तमान जीव में बाग लेने की अपनी अनिष्टा जहिर की है।

- xii नियम 6 §21 के अनुसार में, जीव आरंभ ठोने की सुचना देते हुए रसी फैडरेशन के दृतावास से अनुरोध किया गया का कि के अपने देश के नियंत्रिकों/उत्पादकों को प्रश्नावली का उत्तर निष्पारित समय में देने के लिए कहें। नियंत्रिक को देजे गए पत्र, याचिका और प्रश्नावली की एक प्रति एवं नियंत्रिक का नाम और पता दी दृतावास को देजी गयी ही।
- xiii ये पै एफ ई के नियंत्रित इत्तम नियंत्रिकों को, नियम 6 §41 के अनुसार, आवश्यक सुचना मांगते हुए एक प्रश्नावली देजी गयी ही :-
- ० मैसर्स यू. गोयनका एंड संस लिमिटेड  
मुम्बई
- ० मैसर्स प्रगति इंटरनेशनल  
नाशिकतली
- ० मैसर्स विनस इसूलेशन्स  
नई दिल्ली
- ० मैसर्स मैकेनिकल ऐकांग इंडस्ट्रीज लिमिटेड  
मुम्बई
- ० मैसर्स यात्य पालीमर्स  
पुणे
- ० मैसर्स विएफ ई कोटिंग इंडस्ट्रीज  
अहमदाबाद

- 0 मैसर्स प्रगति प्लास्टिक प्राइवेट लिमिटेड  
नई दिल्ली
- 0 ऑटोमैट हॉल स्ट्रीज  
अहमदाबाद
- 0 मैसर्स हिप-फ्लोन इंजीनियरिंग कम्पनी  
अहमदाबाद
- 0 प्लास्टिक्स प्रोडक्ट्स इंजीनियरिंग कम्पनी,  
नरेल
- 0 मैसर्स कौरोसियन इंजीनियर्स  
अहमदाबाद

निम्नलिखित वरा उत्तर दिए गए है :-

- 0 ऑटोमैट हॉल स्ट्रीज
- 0 मान्च पॉलीमर्स
- 0 हिप-फ्लौन इंजीनियरिंग पंड कम्पनी
- 0 प्लास्टिक्स प्रोडक्ट्स इंजीनियरिंग कम्पनी
- 0 एक उत्तर तारीख 31 मार्च, 1999 गर्ग एसोसिएट्स प्राइवेट लिमिटेड से प्राप्त तुआ था जो भारत में 1966 से पै थे एवं इस्तर वले तारों और केवलों के अग्रणी उत्पादक होने का वादा करते हैं।

## ० मैकेनिकल प्रैक्टिंग इंडस्ट्रीज लिमिटेड

- xii. प्राधिकारी ने बिभिन्न हितबद्ध पार्टीयों वरा प्रस्तुत किये गए सक्षयों के अ-गोपनीय रूप एवं सार्वजनिक फाईल के रूप में उपलब्ध कराए और हितबद्ध पार्टीयों वरा निवेशण के लिए फाईल को सुला रखा ।
- xiii. यह पता लगाने के लिए कि पाटनमार्जिन से कम का घटनरेखी सीमाशुल्क स्वदेशी उपोग की बति को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा, उत्पादन की अधिकतम लागत एवं सम्पन्नतः स्वीकृत लेखा सिद्धतों के आधार पर भारत में विषयगत माल को बनाने और बेचने की लागत का ठिकाना लगाने के लिए लागत जाँचें की गयी थीं ।
- xiv. इस अधिसूचना में यह चिन्ह एक हितबद्ध पर्व वरा गोपनीय आधार पर की गयी सूचना का घोतक है और उसे प्राधिकारी वरा नियमों के अनुसार ऐसा माना गया है ।
- xv. प्राधिकारी ने वादी के परिसर पर खल सत्यापन किया है ।
- xvi. जांच 1 अप्रैल, 1997 से 30 जून, 1998 [15 माहीने] की अवधि के लिए की गयी थी ।

## स. वादी के विचार

2. वादी ने अपनी याचिका और अपने वाद के अधिवेदनों में निम्नलिखित प्रमुख युद्धे उठाए है :-

1. पीटिएफई एक रॉजीनियरिंग पॉलीमर है जिसकी ब्रेजीड विक्रेतारी है और इस सामग्री का कोई विकल्प नहीं है । यह ग्रौट तौर पर बानेवार छूर्ण [बानेवार ग्रैड] या सस्पेशन ग्रैड [तथा जलीय फैलाक्षण्य इवर इक्सिशन ग्रैड] में बर्गीकृत है । पीटिएफई के उत्पादन के लिए मुख्य कच्चा माल, एप्रेसफ और क्लोरेफार्म है । पीटिएफई के उत्पादन के लिए आवश्यक निवेशों का क्षेत्र भी बाग आयोजित नहीं है ।

i) पीरिपफई का विश्वभर में इसी पदति से व्याणियक उत्पादन किया जाता है, अर्थात्

:-

~~अभी~~

यह कहा गया है कि उपरोक्त के अलावा कोई और प्रक्रिया नहीं है जिसके द्वारा पीरिपफई का उत्पादन किया जा सके।

ii) मैसर्स पचपफप्ल, पीरिपफई की विमेन्न ग्रेड्स के उत्पादक हैं। ये नीचे लिए गए के अनुसार हैं :-

(क) सस्पेंशन ग्रेड्स- पच51प, पच71, पच81जी, पच5वीप्स

(ख) पमलशीयन ग्रेड्स-पच620, पच630, पच603/1, पच603/2, पच603/3

(ग) फिल्ड ग्रेड्स- ये कर्बन, कॉर्बन, ग्रेफाइट और योलियडीनम डार्हस्ट्फार्ट के के मिश्रण हैं।

iv) इसी एफ चार सामग्री की तुलना, वर्धी के पच51प तथा पच71प (वोनों भी सस्पेंशन ग्रेड की श्रेणी में हैं) से की जा सकती है। पफ4, पच51प और पच71प उन्हीं प्रयोगों के लिए प्रयोग किये जाते हैं और उत्पादन की वस्त्री प्रक्रिया अपनाई जाती है। तथापि, इसी सामग्री कीटीर्थीकरण थूंसला और तनन न्सानधर्य- वारी व्यारा उत्पादित मल की तुलना में इटिया है। पचपफप्ल ग्रेड्स की तुलना में इसी ग्रेड में प्रबुष्य स्तर ऊँचा है।

v) पचपफप्ल व्यारा सस्पेंशन और पमलशन पीरिपफई (वानेवार और जल में छुलीय ग्रेड्स) का उत्पादन 80:20 के अनुपात में हैं जो देश की कुल मात्रिक आवश्यकता को पूरा करता है।

vi) पचपफप्ल व्यारा अपनाई गयी टैक्नोलॉजी इस देश में विश्व के अग्रणी में से एक, अर्थात् मैसर्स पटेक्षेम, फास से ग्राहन की गयी है। यह एक खैस टैक्नोलॉजी है और विश्व में केवल 6 बड़ुराष्ट्रीयों को उपलब्ध है।

- VII. विश्व के अमरणियों बरा अपनाई गयी पॉलिमाराईजेशन टैक्नोलॉजी "फी रेडिकल आ पॉलिमाराईजेशन" है। मैसर्स पचपफ पल बरा अपनाई गयी यह टैक्नोलॉजी, वर्षों के अनुसंधान और विकास से प्राप्त सर्वोत्तम पीलाम देती है। रसियों बरा अपनाई गयी टैक्नोलॉजी साथा एडीजन पॉलिमाराईजेशन समझी जाती है जो औंतम उत्पाद को, रस में प्रयोग की जने वाली अपर्याप्त टैक्नोलॉजी के कारण, क्वालिटी की दृष्टि से मुक्त रेडिकल पॉलीमराईजेशन उत्पाद से तुलनीय नहीं बनती।
- VIII. उच्च क्वालिटी निष्पादन पुर्जे, तारे, केबलों, क्रोटिंग आदि उत्पादित करने के लिए सामग्री की क्वालिटी<sup>का</sup> अत्यंत महत्व है। यह कच्चा माल बिट्या श्रेणी का है तो संबोधित पुर्जे अपने-अपने उपयोगों में असफल रहेंगे। तब प्रैविएप्फ के वास्तविक लाभों को एक तरफ छोड़कर वैकल्पिक सामग्रियों का विकास किया जाएगा।
- IX. रसी माल की क्वालिटी बहुत बिट्या है। अतः बढ़ी द्वारा विक्रीसेत किये गए बाजार थीरे-थीरे वैकल्पिक सामग्री की ओर ज्ञा रहे हैं।
- X. एचपफ पल ने अपना विणियिक उत्पादन 1988 में आंख किया जब प्रैविएप्फ की मांग केवल 150 मीट्रिक टन की थी और संयंत्र की क्षमता 500 टन प्रतिवर्ष की थी। भारत में प्रैविएप्फ के उपयोग को बढ़ने के लिए एचपफ पल ने काफी निवेश किया है। जबकि उनके इन प्रयासों के परिणाम<sup>प्राप्ति</sup> हो रहे थे, पिछले तीन वर्षों के दौरान देश में रसी सामग्री के पाठन ने एचपफ पल के निष्पादन पर विपरीत प्रभाव डाला है।
- XI. रस ने, चाहे व्यापार माध्यमों से या सीधे ही, केवल दानेदार चूर्ण ग्रेडस की भी सप्लाई की है और एमल्शन/जलीय बुलन ग्रेड्स की सप्लाई नहीं की है।
- XII. एचपफ पल बरा उत्पादित प्रैविएप्फ के ग्रेडस की तुलना में रसी सामग्री की क्वालिटी, उनके बाहे प्रयुक्त अपर्याप्त टैक्नोलॉजी और कच्चे माल के उनके विशिष्ट उपयोग में अकुशलता के कारण<sup>कारण</sup> है। अतः उनके संसाधन की अकुशलता<sup>वाली</sup> उनके उत्पादन की उच्चतर लागत में परिवर्तित होती है। तथापि, वे हताशा<sup>मूल्यों</sup> पर लगतार विक्री करते हैं जिससे बजार की स्थिरता पूर्णतया नष्ट हो जाती है।

- xiii) पीविएफई के आयतों में भारी बृद्धि हुई है। एचएफएल अपनी बाजार हिस्सेदारी तेजी से खोलारहा है और इसे अपनी सामग्री, अयतित रेजीन के लौड़ भूल्य से तुलनीय भूल्य पर बेचनी पड़ रही है। प्रतिस्पद्ध मूल्यों पर सामग्री देते हुए एचएफएल को अपनी रेजिन भारी हाँन पर बेचनी पड़ी है।
- xiv) ब्रिक्षियों में गिरवट के कारण एचएफएल की व्यवस्था उपयोगिता भी गिरतीरही है।
- xv) एचएफएल ग्राहकों को सप्लाई, फैक्ट्री-एतर आधार पर की जाती है। सभी हैडलिंग लागत  $\frac{1}{4}$ टैक्नीकल सेवाएँ<sup>१</sup> ग्राहक द्वारा बहन की जाती हैं।
- xvi) एचएफएल सामग्री की पैकिंग फाईबर इमों में की जाती है जिनमें एलडीपी की दोहरी लाइनिंग लगी रहती है।
- xvii) ग्रैसर्स एचएफएल हैदराबाद, भारत में इस रेजिन के एकमात्र उत्पादक है। एचएफएल की संयंत्र व्यवस्था में सबसे छोटी है और उसे दू पैंट, अमेरिका/जापान और थ्रेपओ टैक्माश-एक्सपॉर्ट, मास्को जैसे देशों से प्रतिस्पद्ध करनी पड़ती है। जिनकी अपनी-अपनी संयंत्र व्यवस्था 10,000 मी.टन प्रतिवर्ष की है।
- xviii) बादी द्वारा, उपयोग विकास और ग्राहक सेवा में क्रिये गए निवेश की मात्रा 8.10 करोड़ है। इस बात का श्रेय बादी को जाता है कि 1991 के पीविएफई के 300 मी.टन/वार्षिक का बाजार, उनके विषयन एवं उपयोग विकास प्रयासों के कारण आज के 800 मी.टन की मांग वाले बाजार में विकसित हो गया है। भारत से बाहर के सप्लायर्स को अपनी सामग्री भारतीय भूमि में सप्लाई करने तथा बादी से बाजार छीन लेने का प्रमुख कारण रहा है।
- xix) पीविएफई के प्रयोग के बादी द्वारा विकसित नये क्षेत्रों में निम्नलिखित शामिल है:-
- १ क) उच्च बैलटेज सर्किट ब्रेक्स के लिए पीविएफई नोजल हेड्स का स्वदेशीकरण;
  - १ स) सिंचाई के प्रयोजनों के लिए हरी पीविएफई पट्टियों का विकास;
  - १ ग) क्षारक ग्रन्ट्यों की पौधें के लिए पीविएफई चढ़े रबड़ के डायाफार्मों का विकास;
  - १ घ) ऐसाइलों के हेस्से;
  - १ ङ) पीविएफई पम्प का विकास;
  - १ च) बैटरीयों के लिए पीविएफई अस्तरण का विकास;
  - १ छ) पीविएफई उत्कीर्णित टेपों का विकास;

३०५। रुसी सप्लाईर्स द्वारा पीवेपएफई के पाटन के कारण पड़े मूल्य संबंधी दबाव की बजाह से कांडी को अपने मूल्यों को आयतित पीवेपएफई के लैडिङ मूल्य के बरबर लाना पड़ा, जिसके कारण वह जीवं और अवधि के बाद अनुसंधान एवं विकास तथा उपयोग विकास में और आगे निवेश के प्रयोजन के लिए अधिकैश निधि नहीं बना सका।

ग. आयतितकों, निर्यातकों और अन्य हितधर पार्टीर्स के विचार

३. आयतितकों के विचार

३१। अटोमेट हॉल स्ट्रीज

- i। पीवेपएफई टेफलोन मर्दों के उत्पादकों के रूप में, इसरे, पचपपल, बीपआरसी, पनवेपीसी, ऐपनजीसी, बेपचर्क्सिल तथा खास संगठनों जैसे सरिवदारों को सप्लाई की जाती हैं जो केवल क्वालिटी उत्पादों की डिलीवरी हो लेते हैं। उत्पाद की क्वालिटी को सुनिश्चित करने के लिए कहचे माल का शुद्ध होना जरूरी है। कहचे माल, अक्षत् पीवेपएफई की खरिद बादी से की गयी थी और यह मिलसिला बारह बष्टी तक चलता रहा। तथापि, अपने उत्पाद की घोटया क्वालिटी के कारण उन्होंने रुस से आयत शुरू किये जो न केवल क्वालिटी की दृष्टि से संतोषजनक नहीं, बर्दिक मूल्यों की दृष्टि से भी सस्ते हैं।
- ii। सरिवदारों के साथ क्वालिटी संबंधी समस्याएँ नहीं आयीं, क्योंकि आयतित कहचे माल का प्रयोग किया जा रहा था जिसकी समय पर हिलीवरी होती है।
- iii। बादी, जोकि पीवेपएफई का एक मात्र उत्पादक है, उच्चे मूल्य पर घटिया क्वालिटी की सामग्री सप्लाई करता है। यदि पाटनरेशी सीमाशुल्क लगाया जाता है तो उससे, आयतित पीवेपएफई का प्रयोग करते हुए क्वालिटी के तैयार उत्पादों को सप्लाई करने वाली कम्पनियों को हानि होगी।

(ख) मैरी मायथ पॉलीमर्स

इन्होने जाँच की अवधि में या किसी और समय भी रुसी मूल के या यहाँ से निर्यातित पीटी शक्ति का आयात नहीं किया है।

(ग) गर्ग एसोसिएट्स

- i) ग्रुप कम्पनियों में से दो, गर्ग एसोसिएट्स प्रा० लि० और धूय इलैक्ट्रानिक्स प्रा० लि०, पीआई भुवन सी। पीटी शक्ति स्तर वाले तार और केबल एवं पीटी शक्ति स्लीव्स। ट्यूबों के डिजाइन तथा सुत्पादन में संलग्न हैं और अधिकतर जापान से फाइन पाउडर पीटी एफ ई की भारी मात्राओं का प्राप्ति करते हैं।
- ii) गर्ग एसोसिएट्स प्रा० लि० ही शायद भारत के एकमात्र निर्यातक है जो पश्चिमी योरोप, ब्रिटेन, कनाडा और न्यूजीलैण्ड के विकसित बाजारों को सच्च मूल्य संवर्द्धन पर पीआई भुवन सी का निर्यात कर रहे हैं। धूय इलैक्ट्रानिक्स प्रा० लि० भारत में व्यावसायिक औद्योगिक आवश्यकताओं की पूर्ति के अलावा स्वदेशी बाजार की, विशेष रूप से रक्षा इलैक्ट्रानिक्स और एरो-स्पेस पूर्ति कर रहे हैं।
- iii) पीटी एफ ई, विभिन्न उपयोगों के साथ बहुप्रयोगी (वर्सटाइल) प्लास्टिक है जिसमें भारी मात्रा की दृष्टि से सबसे सामान्य क्षेत्र मोल्डिंग और लाइनिंग के क्षेत्र हैं। पीटी एफ ई, फाइन पाउडर रेजिन को, बहुत पलाला टेप बना कर, टेप को सिल्वर या निकल प्लेटिन कॉपर चालकों (कंडक्टर्स) पर लपेट कर और तार बनाने के लिए सच्च तापमान पर फ्यूजिंग कर प्रयोग किया जाता है। स्लीव या ट्यूबिंग्स बनाने लिए भी ऐसी ही प्रक्रिया अपनाई जाती है।
- iv) यूकि विभिन्न उपयोगों के लिए प्रयुक्त पीटी एफ ई की किसी के मूल्य में भारी अंतर होता है, अतः पाण्डन के लिए जाँच में विभिन्न ग्रेड्स पर भी विद्यार करना चाहिए।
- v) घादी के उद्देश्य संदेहास्पद है। उनके सत्पादों के मूल्य कभी भी, सुत्पादन की लागत से संबंधित व्यावसायिक सोच-विचार पर आधारत नहीं रहे। ना ही पीटी एफ ई की

क्यालिटी या इसके किसी माप की सततता की सन्हें पर्याह रही है। एथ एफ एल द्वारा, वर्तमान आयात सीमा-शुल्क ढाँचे एवं भालर की विनिमय दर को हिसाब में लेते हुए, आयातित पी टी एफ ई की लैण्डल लागत के आधार पर विगत में मूल्यों में अधिकातर वृद्धि, मनमर्जी से की जाती रही है।

- v) इस सत्तारदाता को, यादी द्वारा सप्लाई किए गए पी टी एफ ई की घटिया क्यालिटी के लिए क्षतिपूर्ति की माँग करनी चाही। जब एथ एफ एल क्यालिटी को सुधारने के सन्केत प्रयासों के कोई संतोषप्रद परिणाम नहीं निकले तो जुलाई, 1998 से यादी से और आगे की खरीदें रोक दी गई थीं।
- vii) प्रतिवादी अब निलान्त रूप से आयातित सामग्री पर निर्भर है।
- viii) जबकि मै ० एथ एफ एल के पास कार्यों (ऑपरेशन्स) की लागत घटाने के लिए कोई प्रोत्साहन नहीं है, उसी सत्पादक को ससकी नीची सत्पादक लागत के लिए दण्ड नहीं दिया जाना चाहिए।

#### (घ) डिप.फलोन इंजीनियरिंग एण्ड कम्पनी

- i) इस सत्तारदाता का कहना है कि सन्होने जाँच की अवधि के दौरान रस से पी टी एफ ई का आयात नहीं किया है।
- ii) पी टी एफ ई के एक संसाधक होने के नाते ये आयातित पी टी एफ ई और एथ एफ एल द्वारा सत्पादित के बीच ऐल्ली प्रत्योगिता चाहेंगे।
- iii) सन्हें आयातों का सहारा लेना पछ़ा क्योंकि एथ एफ एल द्वारा सप्लाई की गई रेजिन की क्यालिटी विभिन्न संसाधनों के लिए अनुपयुक्त थी और यादी, सनकी आवश्यकता को समय पर पूरा करने में असमर्थ था।
- iv) यह महसूस किया जाता है कि भूमण्डलीकरण और परिणामतः प्रतिस्पर्षी मूल्य-निर्धारण और सफमोक्ताओं के लिए सुपलब्ध यिकल्पों की अनेक किस्मों को देखते हुए, पाटन-रोधी सीमा-शुल्क लगाना या जाँधाधीन सत्पाद के आयातों को प्रतिबंधित करना प्रति-सत्पाद हो जाएगा।

**(३) प्लास्टिक प्रोडक्ट्स इंजीनियरिंग कम्पनी**

- i) इस सत्तरदाता ने जाँच अधिक के दौरान मैसर्स हेलोजिन ज्याइण्ट स्टॉक कम्पनी से पीटीएफ ई का आयात नहीं किया।
- ii) उपभोक्ता की दृष्टि से, पीटीएफ ई के एक मात्र सुल्पादक होने के नाते मैसर्स एथ एफ एल को, उनके दावे को मान कर और पाठन रोधी सीमा-शुल्क लगा कर एक एकाधिकारी का दर्जा नहीं पाने देना चाहिए।
- iii) यादी, पीटीएफ ई के सभी ग्रेड्स का सुल्पादन नहीं करता है, अतः आयातों को प्रतिबंधित करने के संपाद्य प्रति - सुल्पादक होंगे।

**(४) मैकेनिकल पैरिंग इण्डस्ट्रीज लिं.**

- i) अन्त्य प्रयोग के लिए क्यालिटी, सुपलब्धता और सुपयुक्ताता के महत्व देते हुए, भारतीय उपभोक्ताओं के हित में सरकार ने, पीटीएफ ई के मुक्त आयात को अनुमत कर दिया है। खास-खास उपयोग के क्षेत्रों / अन्य प्रयोक्ताओं की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में सुपलब्ध पीटीएफ ई के विभिन्न ग्रेड्स देने की स्थिति में यादी नहीं है। यद्यपि अधिकतम आवश्यकताओं की पूर्ति का स्रोत में एथ एफ एल है, ऐसा अक्सर पाया जाता है कि उनके द्वारा सप्लाई किए गए रेजिन की क्यालिटी में समनुरूपता नहीं है।
- ii) यह सत्तरदाता स्वदेशी उत्थोग और साथ ही निर्यात बाजार की आवश्यकताओं को पूरा करता है। निर्यात के प्रयोजनों के लिए क्यालिटी की समनुरूपता आवश्यक है जिसके कारण पीटीएफ ई रेजिन के आयात करने पड़ते हैं।
- iii) विभिन्न स्रोतों से पीटीएफ ई रेजिन के आयातों की लैण्डल लागत, मैं० एथ एफ एल लिं से खरीद की लागत से प्रायः अधिक ही रही है। निर्यात बाजार और साथ ही अन्त्य उपयोगों हेतु क्यालिटी वाले पहलु को ध्यान में रखते हुए यह बात दोहराई जाती है कि ऐसे मंहगे आयात आवश्यक हैं।

- (M) भारतीय बाजार में रुसी पी टी एफ  $\frac{1}{2}$  का बड़े पैमाने पर पाठन नहीं है, अतः पी टी एफ  $\frac{1}{2}$  रेजिन पर पाठन-रोधी सीमा-शुल्क लगाने से, गैर प्रतिस्पर्द्धी मूल्य और अस्वीकार्य तथालिटी के कारण निर्यातों को कम करने से विदेशी मुद्रा आय पर वितरीत प्रभाव पड़ सकता है।

#### 4. निर्यातकों के विचार

##### हेलोजिन एबाइंट स्टॉक कम्पनी

इस निर्यातक ने निर्धारित प्रस्नावली के अनुसार और अनुमति समय सीमा के भीतर, सूचना देने के प्राधिकारी के अनुरोध का उत्तर नहीं दिया है। तथापि, प्राधिकारी को लिखे तारीख 14/89 के अपने पत्र में उन्होंने निम्नलिखित बिन्दु उठाए हैं :-

- i) यादी के तर्क गलत और निराधार है।
- ii) यादी ने गलती से यह निष्कर्ष निकाला है कि रुस में पी टी एफ  $\frac{1}{2}$  का सामान्य मूल्य, भारत को किए गए निर्यात के मूल्य से बहुत ऊँचा है।
- iii) यादी का यह कहना कि रुसी उत्पादक वेतन, मजदूरी और याणिजियक हितों के खर्च स्टॉट से ले रहे हैं, पूर्णतः वैसे ही निराधार है जैसा कि उनका यह कहना कि रुसी उपक्रमों में कार्मिक भारत की तुलना में "आधे से कम" है।
- iv) यह कि रुस में पी टी एफ  $\frac{1}{2}$  का उत्पादक, जो एस सी हैलोजिन है, तथ्यतः सही नहीं है। भारत सुनकी पूर्तियों की मात्रा अनियमित और नगण्य रही है।
- v) एथ एफ एल के लिए वी ए ओ टैकमाश एक्सपोर्ट (मास्को) से प्रतिस्पर्द्धी करना अनावश्यक है क्योंकि दूसरी तो एक व्यापारिक संस्था है जिससे कभी भी पी टी एफ  $\frac{1}{2}$  का उत्पादन नहीं किया।

- v) मूल्यों की तुलना के लिए, वादी ने पी टी एफ ई के खूपोण्ट (अमरीका) एवं डाइकिन (जापान) जैसे सबसे बड़े उत्पादकों को युना है किन्तु ये उत्पादक पी टी एफ ई रेजिन के मूल्य में तकनीकी सेवा (हैण्डलिंग थ्रॉथ) के थ्रॉथ को भी और शामिल करते हैं।
- vi) उत्पादक के लिए प्रयुक्त टैक्नॉलॉजी एवं पाश्च्य-शोधन या और आगे संसाधन के आधार पर, पी टी एफ ई के मूल्यों में काफी भिन्नता हो सकती है। मूल्यों की तुलना के लिए खूपोण्ट (अमरीका) के मोलिंडिंग पी टी एफ ई थूर्ण और फ्लूरोएलास्ट-4 वी एन का हयाला देना सही नहीं है क्योंकि कणों के आकार के कारण पी टी एफ ई के ये ग्रेड्स भिन्न हो सकते हैं और आगे संसाधित होने के बाद इनके उपयोग भिन्न हो जाते हैं जिसके फलस्वरूप उनके मूल्य भी भिन्न-भिन्न होते हैं।
- vii) पी टी एफ ई के मूल्य, प्रयुक्त पैकेजिंग के प्रकार पर भी निर्भर होते हैं। खूपोण्ट का मोलिंडिंग थूर्ण, मैटल कार्डबोर्ड या पॉलीस्टरीन छमो में पैक होता है जबकि फ्लूरोएलास्ट-4 पी एन (जो एस सी हेलोजिन) कागज के शोरों में पैक होता है।
- viii) ऊपर दिए गए कारणों को देखते हुए एवं प्रस्तुत किए गए कागजात की जानकारी प्राप्त कर लेने पर, यह निर्यातक वर्तमान जाँच में भाग लेना आवश्यक नहीं समझता।

#### घ. उठाए गए मुद्दों की जाँच

5. वादी एवं निर्यातकों द्वारा किए गए अभिवेदनों की जाँच कर ली गई है उन पर इसमें इसके आगे उचित स्थानों पर विचार किया गया है।

#### झ. जाँचाधीन उत्पाद

6. वर्तमान जाँच में विचाराधीन उत्पाद, सस्पेशन और एमल्शन ग्रेड्स में पॉलीटैट्रोफ्लूरोएथीलोन (टी एन एफ ई) है।

पी टी एफ ई एक इंजीनियरिंग थर्मोप्लास्टिक है जिसकी असाधारण गुण - धर्मिताराएँ हैं जैसे रसायन निष्क्रियता, धर्षण की निम्न सह-योग्यता (को-एफीशेट), ताप-रोधिता, सर्वोत्तम विद्युत अस्तरण विशेषताएँ, अ-विषाक्ता, अ-ज्यलनशीनता और मौसम के प्रभावों के प्रति रोधकता। अपनी इन विशेषताओं के कारण पी टी एफ का उत्तम विकास, मैकेनिकल, विद्युत एवं इलैक्ट्रॉनिक्स उद्योगों में अनेक उपयोगों में प्रयोग किया जाता है।

मोल्डिंग और अस्टारण के क्षेत्रों में सर्वाधिक आम होने के कारण पी टी एफ ई के विभिन्न प्रयोग हैं। मैकेनिकल उद्योग में पी टी एफ ई का उपयोग बीयरिंग्स, कम्प्रेशन रिंग्स, साइड ब्लॉक्स (बड़ी धातुगत संरचनाओं जैसे पुल, पाइपलाइन्स, ताप-विनिमयकों, कैरिज टंकियों, आदि के विस्तारण में प्रयुक्त), रोटेटिंग पर पर्म्पों के स्टफिंग बायिसज या आल्टरनेटिंग शैफ्ट्स, पीड़कों, आटोकलेव वाल्व्स आदि के उत्पादन हेतु किया जाता है। पी टी एफ ई का प्रयोग अनसिन्टर्ड ट्रेप के उत्पादन एवं छपाई एवं टैक्सटाइल उद्योग में सहाहों को चिपकन रोधी बनाने के लिए रोलरों की कोटिंग हेतु किया जाता है।

विद्युत उद्योग में, निरस्सरण द्वारा पी टीएफ ई अस्तरित तार और टेप लिपटे केबल सूक्ष्म संचयोग में प्रयोग किए जा रहे हैं पी टी एफ ई का और सामान्य प्रयोग विभानन, इलैक्ट्रॉनिक कम्प्यूटर्स राडार आदि में किया जा रहा है। यह, योजक पुर्जे, को-एक्सिल प्लग्स, इलैक्ट्रॉनिक टच्यूबों और एरियलों के लिए स्पोर्टें, सच्च तनन संचालकों के लिए क्रास-बार, अस्तरण हिस्से आदि अनाने के लिए प्रायः सामान्यतः प्रयोग किया जाता है। अब सीलें और योजन (ज्वाइंट्स) रसायन संचयोग में पी टी एफ ई के सर्वाधिक सामान्य क्षेत्रों में से एक है। इसके अलावा पाइप लाइनों, वाल्वों, पम्पों आदि के लिए भी पी टी एफ ई समान रूप से प्रभावी है।

पी टी एफ ई कस्टम टैरिफ अधिनियम, 1975 के अध्याय 39, टैरिफ वर्गीकरण, एवं एस कोड नं 3804.61 के अंतर्गत वर्गीकृत है। तथापि, यह वर्गीकरण केवल संकेतात्मक है और वर्तमान जाँच के विस्तार पर किसी भी प्रकार से बाध्यकार नहीं है।

च. समान वस्तुएँ

7. पी टी एफ ई विभिन्न ग्रेड्स में बनता है और बिकता है। तथापि, पी टी एफ ई, जो विश्वभर में एक ही रसायनिक प्रक्रिया से तैयार किया जाता है, के विभिन्न ग्रेड्स के उत्पादन में प्रयुक्त प्रक्रिया, उपकरण या टेक्नोलॉजी में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। पी टी एफ ई के विभिन्न ग्रेड्स को प्राप्त करने के लिए, विभिन्न प्रकार की फिनिशिंग क्रियाएँ की जाती हैं जो अधिकतर बैचों में होती हैं। अतः स्वदेशी स्थौर द्वारा और इस जाँच के विषयगत देश में उत्पादित पी टी एफ ई, अपने अनिवार्य भौतिक एवं तकनीकी विशेषताओं में समान है।

यह स्थापित करने के लिए कि स्वदेशी स्थौर द्वारा उत्पादित पी टी एफ ई, रुस से निर्यातित के समान वस्तु है, उसकी विशेषताओं जैसे तकनीकी विनिर्देश, उत्पादन प्रक्रिया, कार्यों एवं प्रयोगों तथा टैरिफ वर्गीकरण पर विचार किया गया है। कुछ हितबद्ध पार्टियों ने आयातित पी टी एफ ई और वादी द्वारा उत्पादित पी टी एफ ई की क्षालिटी में अंतर पर भी बल दिया है। तथापि, उत्पाद की उत्पादन प्रक्रिया, उपयोग और समग्र प्रयोग एक समान है। इस जाँच की विषय वस्तु होने के कारण, आयातित उत्पाद एवं वादी द्वारा उत्पादित के बीच बहुत अधिक विनिमेयता है और परिणामतः होने वाली प्रतिस्पर्द्धा है।

इस बात पर बहस के लिए कोई तर्क नहीं है कि स्वदेशी स्थौर द्वारा उत्पादित पी टी एफ ई की विशेषताएँ आयातित माल वाली से बहुत निकटता से मिलती हैं और यह वाणिज्यिक एवं तकनीकी, दोनों ही दृष्टियों से विषयगत देश से आयातित पी टी एफ ई का स्थानापन्न है। स्वदेशी स्थौर द्वारा उत्पादित पी टी एफ ई को नियम २३ी के अर्थों में, रुस से निर्यातित उत्पाद के समान घस्तु माना गया है।

छ. स्वदेशी स्थौर

8. याचिका मैं हिन्दुस्तान फ्लोरोकार्बन्स लिं, हैदराबाद द्वारा दी गई है लिखेभारत में इस उत्पाद के एक मात्र उत्पादक होने की स्थिति की पुष्टि, रसायन तथा सुरक्षक मंत्रालय ने भी की है। अतः वादी स्वदेशी स्थौर है और उसके पास नियमों के अंतर्गत वर्तमान याचिकादायर करने का अपेक्षित आधार है।

### ज . पाठन

९. धारा ४ ए ( १ ) के अंतर्गत किसी वस्तु के संबंध में सामान्य मूल्य का अर्थ है :

समान वस्तु के लिए व्यापार के सामान्य रूप में तुलनीय मूल्य, जब वह वस्तु निर्यातक देश या क्षेत्र में खपत के निमित्त हो, जिसका निर्धारण उप धारा ( ६ ) के अंतर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार किया गया हो : या

1) जब व्यापार के सामान्य रूप में निर्यातक देश या क्षेत्र के स्वदेशी बाजार में समान वस्तु की कोई बिक्री न हो या जब निर्यातक देश या क्षेत्र के स्वदेशी बाजार में, विशेष बाजार स्थिति या बिक्री की कम मात्रा के कारण ऐसी बिक्री से उचित तुलना न की जा सके, तब सामान्य मूल्य इनमें से कोई होगा :

क) समान वस्तु का तुलनात्मक प्रतिनिधि मूल्य, जब उसका निर्यात, निर्यातक देश या क्षेत्र से या किसी अन्यदेश से किया जाए, जिसका निर्धारण उप-धारा ( ६ ) के अंतर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार किया गया है, या

ख) मूलता के देश में उक्त वस्तु की उत्पादन लागत जिसमें प्रशासनिक बिक्री और सामान्य लागत तथा लाभ के लिए उपयुक्त राशि जोड़ी गई हो, जिसका निर्धारण उप धारा ( ६ ) के अंतर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार किया जाए :

किन्तु यदि वस्तु का आयात, मूलता के देश से इतर किसीदेश से किया गया हो तथा जहाँ वस्तु को निर्यात वाले देश से होकर केवल यानान्तरित किया गया हो या ऐसी वस्तु का निर्यात वाले देश में उत्पादन नहीं किया जाता हो या निर्यात वाले देश में कोई भी तुलनात्मक कीमत नहीं हो, तब सामान्य मूल्य का निर्धारण, मूलता के देश में इसकी कीमत के संबंध में किया जाएगा ।

10. ऊपर दी गई धारा के अनुसार प्राधिकारी ने विषयगत देश के झात निर्यातक को एक प्रस्तावली भेजी। तथापि, निर्यातक ने प्रस्तावली के अनुसार सूचना देने के अनुरोध का उत्तर नहीं दिया, किन्तु प्राधिकारी को लिखे अपने 1/4/39 के पत्र में कुछ मुझे उठाए। उन्होंने इस जाँच में भाग लेने की अपनी अनिष्टा भी जाहिर की। अतः सामान्य मूल्य एवं निर्यात मूल्य के संबंध में निर्यातक द्वारा कोई दाये नहीं किए गए हैं। अतः प्राधिकारी को वादी द्वारा दिए गए और सरकारी सांख्यिकी में उपलब्ध के अनुसार, सामान्य मूल्य एवं निर्यात मूल्य के संबंध में निर्मित मूल्य तथा सार्वोत्तम उपलब्ध सूचना पर भरोसा करना पड़ा है।

इ. निर्मित मूल्य एवं उपलब्ध सूचना के आधार पर सामान्य मूल्य तथा निर्यात मूल्य की प्राधिकारी द्वारा जाँच

11. प्राधिकारी का मानना है कि पी टी एफ ई के विभिन्न ग्रेड्स में लागत की दृष्टि से कोई बड़ा अंतर नहीं है और वे उसी सीमा के हैं। वादी द्वारा यह कहा गया है कि दानेदार ग्रेड्स को सुखाना पड़ता है और सुखाने के लिए ऊर्जा की आवश्यकता होती है। इस अतिरिक्त ऊर्जा की लागत कमोबेश, जलीयफ्लाव एमल्शन ग्रेड्स के लिए अतिरिक्त योज्य लागत के बराबर है। अतः दानेदार और एमल्शन ग्रेड्स की अवकल उत्पादन लागत में आंशिक अंतर है और एक समान मानी जा सकती है। इसलिए प्राधिकारी ने इस जाँच के लिए विचाराधीन उत्पाद के रूप में यर्जित सभी ग्रेड्स को समूहित कर दिया है।

(i) सामान्य मूल्य

प्राधिकारी ने पाया है कि रुस के निर्यातक ने निर्धारित प्रपत्र में प्रस्तावली का उत्तर नहीं दिया है और सामान्य मूल्य, निर्यात मूल्य एवं पाटन मार्जिन संबंधी सूचना भी नहीं दी है।

यिनिदिष्ट समय सीमा के बाद प्राधिकारी को प्राप्त पत्र में उन्होंने कुछ सामान्य मुद्रे उठाए हैं और रुस में सामान्य मूल्य के संबंध में वादी के विचारों को आधारहीन एवं गलत कहा है। प्राधिकारी द्वारा यह देखा गया है कि उन्होंने प्रश्नावली का उत्तर देकर युद्ध अपने ही तर्क को प्रमाणित करने का प्रयास नहीं किया है। अतिक उन्होंने इस जाँच में भाग लेने में अपनी अनिष्टा जाहिर की है। अतः प्राधिकारी निर्यातक को असहयोगी मानता है और वह सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना के अनुसार चला है।

वादी ने आँकड़ों के संग्रेहण एवं अमरीका के उद्योगों तथा अन्य अंतर्राष्ट्रीय उत्पादकों से की गई बात-चीत के आधार पर, रुस में उत्पादन की निर्मिति लागत का दावा किया है। जबकि निर्यातक ने यह कहते हुए इस आँकड़े का विरोध किया है कि यह केवल मोटे अनुमान पर आधारित है, उन्होंने अपने सामान्य मूल्य का कोई साक्ष्य नहीं दिया है। इन परिस्थितियों में प्राधिकारी, उपलब्ध सूचना के आधार पर निर्मित मूल्य निश्चित करने के लिए बाध्य है। अतः 1 अमरीकी डालर = ₹039.42 की औसत विनिमय दर पर रुस में सामान्य मूल्य अ.डा. xxxxxxxx कि.ग्रा. या ₹0 xxx / कि. ग्रा. माना जाता है।

### II) निर्यात मूल्य

13. 1% को समुद्री भाड़े, 0.29% को बीमे प्रभार एवं 0.5% की पैकिंग लागत के रूप में शामिल करते हुए, डी जी सी आई एवं आँकड़ों के आधार पर निर्यात मूल्यों किया गया है।

### III) पाटन मार्जिन

14. सामान्य मूल्य अ.डा. xxx / कि. ग्रा. तथा फैक्ट्री एतार मूल्य अ.डा. xxxxxxxx / कि. ग्रा. मानते हुए, प्राधिकारी द्वारा निश्चित किया गया पाटन मार्जिन अ.डा. xxx / कि.ग्रा है (जो निर्यात मूल्य का 4.82% है)।

**क्र. क्षति**

15. पूर्वोक्ता नियम 11, अनुलग्नक-2 के अंतर्गत जब क्षति का निष्कर्ष निकाला जाता है तो ऐसे निष्कर्ष में स्वदेशी उद्योग को होने वाली क्षति का निर्धारण भी शामिल होगा। ऐसा करते समय सभी संगत तथ्यों को ध्यान में रखा जाएगा, जिनमें शामिल हैं—पाटित आयातों की मात्रा, स्वदेशी बाजार में समान वस्तुओं के मूल्यों पर उनका प्रभाव तथा ऐसी वस्तुओं के स्वदेशी उत्पादकों पर ऐसे आयातों का परिणामी प्रभाव। मूल्यों पर पाटित आयातों के प्रभाव पर विचार करते हुए, इस बात की जाँच करना आवश्यक समझा गया है कि क्या भारत में समान उत्पाद के मूल्य की तुलना में, पाटित आयातों द्वारा कीमतों में पर्याप्त कटौती की गई है या क्या ऐसे आयातों का प्रभाव पर्याप्त मात्रा में मूल्यों को अन्यथा कम करना या मूल्यों में होने वाली वृद्धि को रोकना है जो अन्यथा काफी बढ़ गए होते।

पूर्वोक्ता नियम 11 के अंतर्गत अनुलग्नक ॥(III) में और आगे यह भी दिया गया है कि जहाँ एक उत्पाद के एक से अधिक देशों के निर्यात, साथ-साथ पाटन रोधी जाँच के अधीन हों तो प्राधिकारी, ऐसे आयातों के प्रभाव का संघित आकलन तभी करेगा जबकि यह निश्चय होता है कि प्रत्येक देश से आयातों के संबंध में स्थापित पाटन—मार्जिन, निर्यात मूल्य के प्रतिशत के रूप में बताया गया और दो प्रतिशत से अधिक है। एवं प्रत्येक देश से आयातों की मात्रा, समान वस्तु के आयातों का तीन प्रतिशत हो या जहाँ पर देशों का अलग-अलग निर्यात तीन प्रतिशत से कम हो तो आयात, संघित रूप में समान वस्तु के आयातों के सात प्रतिशत से अधिक हो, और आयातित वस्तु एवं समान स्वदेशी वस्तु के बीच प्रतिस्पर्द्धी की दशाओं के प्रकाश में, आयातों के प्रभाव का संघित आकलन सुधित है।

प्राधिकारी नोट करता है कि पाटन का मार्जिन एवं विषयगत देश से आयातों का परिमाण, उपर निर्धारित सीमाओं से अधिक है।

भारत में स्वदेशी उद्योग पर आयातों के प्रभाव की जाँच करने के लिए प्राधिकारी ने पूर्वोक्ता नियमों के अनुलग्नक II (IV) के अनुसार, ऐसे और संकेतकों पर विचार किया है जो उद्योग की परिस्थितियों जैसे सूत्पादन, क्षमता, सुपयोगिता, बिक्री का परिमाण, स्टॉक, लाभकारिता, शुल्क बिक्री प्राप्तियाँ, पाटन का परिमाण और मार्जिन आदि को प्रभावित करते हैं।

(क) आयातों की मात्रा

16. पीटी एफ ई के कुल निर्यात 1995-96, 1996-97 तथा 1997-98 में ( जून, 1998 तक ) क्रमशः 3,34,820 कि.ग्रा., 3,44,184 कि.ग्रा. और 4,75,528 कि.ग्रा. थे। इस प्रकार वृद्धि 1995-96 के ऊपर, 1996-97 में 2.76% और 1996-97 के ऊपर 1997-98 ( जून, 1998 तक ) में 38% थी। वर्ष 1995-96 के ऊपर 1997-98 में वृद्धि 41.9% थी। इस प्रकार जांच अधिक के दौरान आयातों की मात्रा में भारी वृद्धि हुई है।

रुस से आयात 1995-96, 1996-97 तथा 1997-98 (जून, 1998 तक) में क्रमशः 24,130 कि.ग्रा., 7,000 कि.ग्रा. तथा 40,000 कि.ग्रा. रहे। आयातों की मात्रा में 1995-96 के ऊपर 1996-97 में 68% तथा 1996-97 के ऊपर 1997-98 में 480% वृद्धि हुई। तथापि, 1995-96 की तुलना में 1996-97 में आयातों में गिरावट आई थी।

अन्य देशों से आयातों की मात्रा 1995-96, 1996-97 तथा 1997-98 ( जून, 1998 तक ) क्रमशः 3,10,790 कि.ग्रा., 3,37,184 कि.ग्रा. तथा 4,34,863 कि.ग्रा. रही थी। कुल आयातों में रुस की हिस्सेदारी 1995-96, 1996-97 तथा 1997-98 में क्रमशः 7.76%, 2.07% तथा 9.35% रही थी।

17. यादी की सत्पाद क्षमता, यास्ताधिक सत्पादन एवं क्षमता सुपयोग निम्नलिखित के अनुसार रहे:-

<u>वर्ष</u>	<u>क्षमता (मी.टन)</u>	<u>सत्पादन (मी.टन)</u>	<u>क्षमता सुपयोग</u>
1995-96	500	385	77
1996-97	500	392	78
1997-98	500	259	52
जांच अधिक	625	333	53.28

मैसर्स प्रबंधपत्र का बमता उपयोग 1995-96, 1996-97 तथा 1997-98 में क्रमशः 77 प्रतिशत, 78 प्रतिशत और 52 प्रतिशत एवं जाँच अवधि में 53.28 था। इस प्रकार जाँच अवधि के दौरान बमता उपयोग में विछले वर्ष के 78 प्रतिशत के स्तर को देखते हुए भारी गिरवट आई। बमता उपयोग में गिरवट का कारण विक्रीयों में गिरवट बताया गया है। संस्थापित बमता में क्रेड फेरवर्तन नहीं हुआ है जो उसी स्तर पर बनी रही।

#### १८. विक्री तथा बजार हिस्सेदारी

१८. यह देखा गया है कि 95-96, 96-97 और 97-98 में पीवेप्पई की मांग क्रमशः 746 मीट्रिक टन, 705 मी.टन और 797 मी.टन की थी। कुल मांग में अद्यतीतों की हिस्सेदारी 95-96, 96-97 और 97-98 में क्रमशः 44.7 प्रतिशत 48.7 प्रतिशत तथा 59.5 प्रतिशत थी। बढ़ी की हिस्सेदारी 95-96, 96-97 तथा 97-98 में क्रमशः 55.2 प्रतिशत, 51.2 प्रतिशत तथा 40 प्रतिशत थी। इस प्रकार कुल मांग में अद्यतीतों की हिस्सेदारी बढ़ी रही है जबकि मारतीय उद्योग की हिस्सेदारी में गिरवट आती रही है। बादी दारा की गयी विक्रीयों की मात्रा 1995-96 के 412 मी.टन से गिरकर 96-97 में 361.00 मी.टन और जाँच अवधि १ अप्रैल, ९७ से जून, ९८ के दौरान 321.88 ग्राम गयी। प्रति किलो ग्राम रुपयों में विक्री मूल्य 95-96, 96-97 और 97-98 में क्रमशः : xxx, xxxतथा xxx है। जाँच अवधि के दौरान उत्पादन की लागत से नीचे के मूल्य पर पीवेप्पई की विक्री के कारण बढ़ी को लाभ की भारी हानि हुई।

#### १९. ओतेम स्टैंक

१९. यह देखा गया है कि बढ़ी का ओतेम स्टैंक 95-96, 96-97 तथा 97-98 में क्रमशः 54 मी.टन, 85 मी.टन तथा 69 मी.टन था। ओतेम स्टैंक में 95-96 के ऊपर 96-97 में 36 प्रतिशत तथा 95-96 के ऊपर 97-98 में 21 प्रतिशत की वृद्धि हुई। जाँच अवधि के दौरान विछले वर्ष की तुलना में ओतेम स्टैंक की मात्रा में कमी आई, किन्तु यह अधिक नहीं रहा।

### १३. मूल्यों में अंडरकटिंग तथा मूल्य अवसादन

20. वादी कहना है कि विषयगत देश से किये गए आयत, स्वदेशी उत्पादक द्वारा बेचे जा रहे समान वस्तु के मूल्यों की अंडरकटिंग कर रहे हैं। सरकारी ऑँकड़ों से यह देखा गया है कि भाइ, ब्रिटेन और पैकिंग प्रभारी के समायोजनों के बाद रुसी प्रैटैपर्फर्म का मूल्य रु. \*११५/किलोग्राम ११५ रुपये ओवी ११५ या अ.डा. \*११५ था। यह रुस में उत्पादन के निर्भीत मूल्य से कम है जो रु. \*११५ कि.ग्रा. या अ.डा. \*११५ कि.ग्रा. लगाया गया है। यह मूल्य 1995-96, 96-97 और जाँच अधिकारी के लिए क्रमशः रु. \*११५ कि.ग्रा., रु. \*११५ कि.ग्रा. तथा रु. \*११५ किलो ग्राम था, जो वादी के उत्पादन की इकाई लागत से नीचे का है। वादी के प्रतिकिलोग्राम विक्री मूल्य 1995-96, 96-97 और 1997-98 (जून, ९८ तक) में क्रमशः रु. \*११५ रु. \*११५/किलो ग्राम, \*११५ कि.ग्राम थे। यह देखा गया है कि इन मूल्य स्तरों पर, जबकि वादी ने ९५-९६ में और ९६-९७ में क्रमशः रु. ५५.५९ लाख और रु. १७.५६ लाख के लाभ कमाए थे, इसने जाँच अधिकारी के दौरान रु. \*११५/कि.ग्रा. की हानि उठाई। वादी वारा उठाई गयी हानियों का कारण निम्न ब्रिटिश उपयोग, कम ब्रिटी तथा अधिक ऑतेम स्टैक के। कई 1997-98 के लिए लाख रुपयों में शुद्ध लाभ/हानि १२२६.११ था। यह देखा गया है कि जाँच अधिकारी के दौरान रु. \*११५/कि.ग्रा. के मूल्य पर वादी अपना उचित विक्री मूल्य प्राप्त करने में असमर्थ रहा। यह कहा गया है कि अपनी बाजार हिस्सेदारी बनाएरखने के लिए वादी को अपनी सामग्री, आयोत्तत उत्पाद के लौहिड मूल्य से तुलनात्मक मूल्य पर बेचनी पड़ी। ग्राही स्पष्टी मूल्य देने के कारण वादी को अपने उत्पाद कमफो हनि पर बेचने पड़े।

### च. अनुसंधान एवं विकास के लिए अपर्याप्त निधि

21. रुसी सप्लायरों द्वारा प्रैटैपर्फर्म के पाठन के माध्यम से डाले गए मूल्य दबाव के कारण वादी को अधिकारी प्रैटैपर्फर्म के लौहिड मूल्य से भेल विलाना पड़ा और उसके कारण वह ऑपरेशन नियन्त्रित नहीं बना सका। जाँच अधिकारी के दौरान अनुसंधान एवं विकास तथा उपयोग विकास में और अग्रे निवेश के प्रयोजनों के लिए अपर्याप्त निधियों के पीछे यज्ञी मुख्य कारण था।

### ट. क्षति पर निष्कर्ष

22. पूर्वोक्त पर विचार करने के बाद यह देशा जा सकता है कि :-

१क। विषयगत देशों से आयतों की मात्रा नितान्त अर्थों में एवं भारत में उत्पादन परं उपभोग के संबंध में अप्रतिबंधितरूप से बढ़ी है ;

ख। बादी की बाजार हिस्सेदारी में शिरबट आयी है जबकि आयतों की हिस्सेदारी बढ़ी है ;

ग। बादी का क्षमता उपयोग कम हुआ है ;

घ। बादी को अपने उचित बिक्री मूल्य से नीचे के मूल्यों पर बिक्री करनी पड़ी है जिससे हानि हुई है ।

ड। आयतों ने स्वदेशी उद्योग के मूल्यों की अंडरकटिंग की है,

च। स्वदेशी उद्योग के पास भावि औतम स्टॉक बच गया है ।

### ठ. कारणात्मक संबंध

23. प्रार्थिकारी का मानना है कि विषयगत देश से आयतों वरा स्वदेशी उद्योग को आर्थिक क्षति हुई है । रूस से आयतों की बाजार हिस्सेदारी में बृद्धि के परिणामस्वरूप वरी की बाजार हिस्सेदारी में कमी आयी है और इससे स्वदेशी उद्योग के मूल्यों को कम करना पड़ा है । और जिससे स्वदेशी उद्योग को अपने उचित मूल्य से नीचे के मूल्य पर बिक्री करनी पड़ी है और स्वदेशी उद्योग इससे उबर नहीं सका है । अतः विषयगत देशों से पारित आयतों के कारण स्वदेशी उद्योग को आर्थिक क्षति हुई है ।

### ड. भारतीय उद्योग का हित और अन्य मुद्दे

24. आमतौर पर पटनरेशी शुल्क लगाने का उद्देश्य उस पाटन को समाप्त करना है जो स्वदेशी उद्योग की क्षति पहुंचा रहा है और भारतीय बजार में खुली एवं उचित प्रसंस्पर्दी की रियति को पुनः बहाल करना है जो देश के आम हित में है ।

25. यह माना जाता है कि पाटनरेशी सीमाशुल्क लगाने से सम्बद्ध सामान के उपयोग से विनिर्भृत उत्पादों के मूल्य स्तर प्रभावित होंगे और परिणामस्वरूप नियति बजार में उनके उत्पादों की सापेक्ष प्रतिस्पर्द्धिता पर प्रभाव पड़ सकता है। किन्तु पाटनरेशी उपायों से भारतीय बजार में उचित प्रतिस्पर्द्ध कम नहीं होगी, विशेषकर तब, जबकि पाटनरेशी शुल्क की लेखि उस रशि तक ही संभित कर दी जाए जो स्वदेशी उद्योग को हुई बातें को कम करने के लिए आवश्यक है। इसके विपरीत पाटनरेशी उपाय लागू किये जाने से पटन बहु प्राप्त होने वाले अनुचित लाभ रेके जा सकेंगे, स्वदेशी उद्योग के इस को रेक जा सकेगा और एकेतिक फार्मिंग के उपभोक्ताओं के लिए व्यापक विकल्प उपलब्ध हो सकेंगे। पाटनरेशी उपायों से विषयगत देशों से आयत लेसी भी प्रकार से कम नहीं होंगे और इसलिए उपभोक्ताओं को होने वाली उत्पाद की उपलब्धता पर कोई असर नहीं पड़ेगा।

26. प्राधिकारी ने स्वदेशी उद्योग के लिए उत्पादन की अधिकतम लागत पर विचार करके स्वदेशी उद्योग को होने वाली बातें को समाप्त करने के लिए आवश्यक पाटनरेशी सीमाशुल्क की मात्रा का पता लगाने हेतु भारत में स्वदेशी उद्योग के लिए प्रतिएफई की उचित विश्वी मूल्य पर विश्वस किया है।

#### ८. लैंडड मूल्य

27. आयतों के लैंडड मूल्य का निर्धारण प्रतिएफई के नियति मूल्य के आधार पर किया गया है। यह सीमाशुल्क के वर्तमान स्तर तथा एक प्रतिशत लैंडिंग और दो प्रतिशत हैडलिंग खर्चों को जोड़कर पटन से संबोधित उपरेक्षा ऐरे में हिए गए विवरण के आधार पर निरैचित किया गया है।

#### ९. निष्कर्ष

28. उपरेक्षा पर विचार करने के बाद यह देखा जाता है कि :-

- १क१ रसी मूल के या वहां से नियतित प्रतिएफई, भारत को उसके सामान्य मूल्य से कम पर नियति किया गया जिसके परिणामस्वरूप पटन हुआ है;
- १स१ स्वदेशी उद्योग को बात हुई है;
- १ग१ विषयगत देशों से होने वाले आयतों के कारण बाते हुई है;

29. यह विचार किया गया कि क्या पटनमार्जिन से कम सीमाशुल्क लगाना इति को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा। इस उद्देश्य के लिए नियतिकों के लैंडिंग मूल्य की तुलना, स्वदेशी उद्योग के उचित विश्वी मूल्य से की गयी जो जाँच अवधि के लिए निर्धारित की गयी थी। जहां यह अंतर पटनमार्जिन से भी कम था, वहां पटनमार्जिन से कम सीमाशुल्क लगाने की सिफारिश की जाती है। तदनुसार यह प्रस्तावित है कि इस संबंध में केन्द्र सरकार द्वारा जारी की गयी अधिसूचना की तारीख से रसी मूल के या वहां से नियति

किये जाने वाले, सीमाशुल्क ट्रैफ के सीमाशुल्क उप-शोर्ड 3904-61 के अन्तर्गत आने वाले पीवेपर्फर्म के सभी ग्रेडस पर, ऑतेम निर्धारण होने तक, अन्तिम पाठनबोधी सीमाशुल्क लगाया जाए ।

वेश	उत्पादक का नाम	राशि
प.	2.	₹. ३००००००
रुस	जे एस सी हैलोजिन तथा अन्य सभी उत्पादक/नियंत्रक	रु. २९९०

30. इस प्रयोजन के लिए आयतों का लैडिंग मूल्य, सीमाशुल्क अधिनियम, 1962 के अन्तर्गत सीमाशुल्क लिमाग वार यथोनधीरत, निर्धारण योग्य मूल्य होगा और इसमें सीमाशुल्क ट्रैफ अधिनियम, 1975 की धारा 3, 3 ए, 8बी, 9 तथा 9प के तहत लगने वाले सीमाशुल्कों को छोड़कर सभी सीमाशुल्क शामिल होंगे ।

#### त. आगे की क्रियाविधि

31. प्रारंभिक निष्कर्षों को अधिसूचित करने के बाद निम्नलिखित क्रियाविधि अपनाई जाएगी:-

- क. प्राधिकारी सभी हितबद्ध पार्टीयों से इन निष्कर्षों पर टिप्पणियां आमंत्रित करेगा और ऑतेम निष्कर्षों में उन पर विचार किया जाएगा;
- ख. सम्बद्ध द्वात नियंत्रकों, आयातकों, याचिकाकर्ता और अन्य हितबद्ध पार्टीयों को प्राधिकारी वारा अलग से लिखा जा रहा है जो, रुप पत्र के जारी होने की तिथि से 40 दिनों के भीतर अपने विचारों से अवगत कर सकते हैं । कोई अन्य हितबद्ध पार्टी भी इन जांचों के प्रकाशन की तरीख से 40 दिनों के भीतर अपने विचार रख सकती है ।
- ग. प्राधिकारी मौखिक अधिकेन के लिए सभी हितबद्ध पार्टीयों को मौका देगा ।
- घ. प्राधिकारी ऑतेम निष्कर्षों को घोषणा करने से पूर्व अवश्यक तथ्यों को उजागर करेगा ।

**MINISTRY OF COMMERCE****NOTIFICATION**

New Delhi, the 9th June, 1999

**Subject:**—Anti-Dumping investigations concerning imports of Polytetrafluoroethylene (PTFE) from Russia—Preliminary Findings.

**24/1/98/DGAD.**— Having regard to the Customs Tariff Act 1975 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury ), Rules 1995, thereof:

**A. PROCEDURE:**

1. The procedure given below has been followed with regard to the investigations:
  - i) The Designated Authority (hereinafter referred to as Authority), under the above Rules, received a written petition from M/s. Hindustan Fluorocarbons Ltd., Hyderabad, alleging dumping of Polytetrafluoroethylene (PTFE) originating in or exported from Russia.
  - ii) The preliminary scrutiny of the application revealed certain deficiencies, which were subsequently rectified by the petitioner. The petition was thereafter considered as properly documented.
  - iii) The Authority on the basis of sufficient evidence submitted by the petitioner decided to initiate investigations against alleged dumped imports of PTFE originating in or exported from Russia. The

Authority notified the Embassy of the subject country about the receipt of dumping allegation before proceeding to initiate investigations in accordance with sub-rule 5(5) of the Rules.

- iv) The Authority issued a Public Notice dated 22<sup>nd</sup> January, 1999, published in the Gazette of India Extraordinary initiating anti-dumping investigations concerning imports of PTFE classified under heading no. 3904.61, Chapter 39 of the Customs Tariff Act, 1975, originating in or exported from Russia.
- v) The Authority forwarded a copy of the Public Notice to the known exporter (whose details were made available by the petitioner and by the Embassy of India in Russia) and industry associations and gave them an opportunity to make their views known in writing within forty days from the date of the letter.
- vi) The Authority forwarded a copy of the Public Notice to the known importers (whose details were made available by the petitioner) of PTFE and advised them to make their views known in writing within forty days from the date of the letter.
- vii) Request was made to the Central Board of Excise and Customs (CBEC) to arrange details of imports of PTFE.
- viii) The Authority provided copies of the Petition to the known exporters and the Embassy of the subject country in accordance with Rule 6(3) supra.
- ix) The Authority sent a questionnaire, to elicit relevant information to the following known exporter in Russia, in accordance with Rule 6(4);
  - M/s Halogen Joint Stock Company,

UI, Lasvinskaya, 98  
Perm  
Russian Federation 614113.

The exporter did not respond to the questionnaire in the prescribed format. However they have addressed a letter to the Authority dated 1<sup>st</sup> April, 1999, in which they have expressed their unwillingness to participate in the present investigation.

- x) The Embassy of the Russian Federation was informed about the initiation of the investigation in accordance with Rule 6(2) with a request to advise the exporters/producers from their country to respond to the questionnaire within the prescribed time. A copy of the letter, petition and questionnaire sent to the exporter was also sent to them, alongwith the name and address of the exporter.
- xi) A questionnaire was sent to the following known importers of PTFE in calling for necessary information in accordance with Rule 6(4);
- M/s. U.Goenka & Sons Ltd.,  
Mumbai
  - M/s. Pragati International  
New-Delhi
  - M/s. Venus Insulations  
New-Delhi
  - M/s Mechanical Packing Industries Ltd.,  
Mumbai
  - M/s Mach Polymers  
Pune

- M/s. TFE Coating Industries  
Ahmedabad
- M/s Pragati Plastics Pvt Ltd.,  
New-Delhi
- Automat Industries  
Ahmedabad
- M/s. Dip-Flon Engineering Co.  
Ahmedabad
- Plastics Products Engineering Co  
Narol
- M/s Corrosion Engineers  
Ahmedabad

Responses were filed by the following:

- Automat Industries
- Mach Polymers
- Dip-Flon Engineering & Co.
- Plastic Products Engineering Company
- A response dated 31<sup>st</sup> March, 1999, was received from Garg Associates Pvt. Ltd., who claim to be pioneer manufacturers of PTFE insulated wires and cables (PIWC) in India since 1966.

- Mechanical Packing Industries Ltd.

- xii) The Authority made available the non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties.
- xiii) Cost investigations were conducted to work out optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) and the information furnished by the petitioner so as to ascertain if anti-dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to the domestic industry.
- xiv) \*\*\* In this notification represents information furnished by an interested party on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules.
- xv) The Authority conducted spot verification at the premises of the petitioner.
- xvi) Investigations were carried out for the period starting from 1<sup>st</sup> April 1997 to 30<sup>th</sup> June 1998 (15 months).

## B. PETITIONERS VIEWS

2. The petitioner has raised the following major issues in their petition and in their subsequent submissions:
  - i) PTFE is an engineering polymer with unique properties and there is no substitute to this material. It is broadly classified as granular powder (granular grade or suspension grade) and aqueous dispersion (or emulsion grade). The main raw materials required

for manufacture of PTFE are AHF and chloroform. No part of the inputs required for the manufacture of PTFE is imported.

- ii) PTFE is produced commercially via the same route, world over, namely :-

\*\*\*

It is stated that there is no process other than the above through which PTFE can be produced.

- iii) M/s HFL, is the manufacturer of various grades of PTFE. These are as specified below:

- (a) Suspension grades- H51A, H71, H81G, H5PS.  
(b) Emulsion grades- H620, H630, H603/1, H603/2, H603/3  
(c) Filled grades- are combinations of Carbon, Glass, Bronze, Graphite and Molybdenum disulphite.

- iv) Russian F4 material can be compared with the petitioners grades of H51A and H71A (both under the category of suspension grade). F4, H51A and H71A are used for the same applications and follow the same process of manufacture. However, the elongation range and tensile strength value of the Russian material is inferior to that of the product manufactured by the petitioner. Pollution levels are higher in the Russian grade than that in HFL grades.

- v) The production of suspension and emulsion PTFE (granular and aqueous solution grades) by HFL is in the ratio of 80:20, which meets the total quantitative requirement of the country.

- vi) The technology adopted by HFL has been acquired from one of the world leaders in the field, namely, M/s Atochem, France. This is a guarded technology and available only to 6 multinationals in the world.

- vii) The polymerisation technology followed by world leaders is “free radical polymerisation” This technology adopted by M/s HFL,

provides best results derived out of years of research and development. The technology followed by the Russians is believed to be simple addition polymerisation which does not make the ultimate product comparable to free radical polymerisation product in terms of quality on account of insufficient technology used in Russia.

- viii) The quality of the material is extremely important for producing high quality performance components, wires, cables, coatings etc. If the raw material is of inferior grade, the corresponding components will fail in their respective applications. Alternative materials would then be developed leaving the real advantages of PTFE aside.
- ix) The quality of Russian material is far inferior. Hence the markets which were developed by the petitioner are steadily being lost to alternative materials.
- x) HFL started commercial production in 1988 when the demand of PTFE was only 150 MT as against a plant capacity of 500 TPA. HFL has invested considerably to increase application usage of PTFE in India. While these efforts were showing results, dumping of Russian material in the country during the last three years adversely affected the performance of HFL.
- xi) Russia, through trade channels or direct, supplies only granular powder grades and not emulsion/aqueous solution grades.
- xii) The quality of Russian material is inferior to the grades of PTFE manufactured by HFL due to inadequate technology followed by them as well as inefficiency in their specific consumption of raw materials. Hence their processing inefficiencies are reflected in their higher cost of production. However, they continuously sell at desperate prices, which completely upsets the stability of the market.

- xiii) There has been drastic increase in imports of PTFE. HFL has been losing its market share at a fast pace and has been compelled to sell its material comparable to landed price of imported resin. By offering competitive prices, HFL has had to sell its resin at considerable loss.
- xiv) The capacity utilization of HFL has been dropping on account of drop in sales.
- xv) The terms of supplies to HFL customers is on ex-works basis. All the handling costs (technical services are borne by the customer).
- xvi) The packing of HFL material is in Fibre drums with LDP double lined liners.
- xvii) M/s. HFL, Hyderabad, is the only manufacturer of this resin in India. HFL has the smallest plant capacity in the world having to compete with giants like Dupont, UAS/Japan, and VAO Techmashexport, Moscow, whose individual plant capacities are 10,000 MT per annum.
- xviii) The quantum of investment made by the petitioner in application development and customer service is Rs 10 crores. It is to the credit of the petitioner that a PTFE market of 300MT/annum in 1991 has been enlarged by their marketing and application development efforts to the present market demand of 800MT. This has been the main reason for suppliers outside India to supply their material on Indian soil and take away the market from the petitioner.
- xix) New areas of application of PTFE developed by the petitioner include the following:
- indigenisation of PTFE nozzle heads for high voltage circuit brakes;
  - development of green PTFE strips for irrigation purposes;
  - development of PTFE cladded rubber diaphragms for pumping of corrosive liquids;
  - components for missiles;
  - development of PTFE pump;
  - development of PTFE insulation for batteries;
  - development of PTFE etched tapes.

(xx) Due to the price pressure exerted through the dumping of PTFE by Russian suppliers, the petitioner was compelled to match the landed price of imported PTFE and was therefore unable to generate surplus funds for purposes of further investment in R&D and application development after the period of investigation.

### **C. VIEWS OF IMPORTERS, EXPORTERS AND OTHER INTERESTED PARTIES**

#### **3. Importers views**

##### **(a) Automat Industries**

- i) As manufacturers of PTFE teflon items, supplies are made to buyers such as ISRO, HAL, BARC, NTPC, ONGC, BHEL and defence organisations who take delivery of quality products only. In order to ensure the quality of the product, the raw material has to be pure. The raw material, viz., PTFE was purchased from the petitioner and this continued for 12 years. However, due to the inferior quality of their product, they turned to imports from Russia, which was not only satisfactory in terms of quality but also priced cheaper.
- ii) Quality problems with buyers did not recur since the usage of imported raw material which have timely delivery schedules.
- iii) The petitioner who is the only manufacturer of PTFE, supplies inferior quality material at higher price. If anti-dumping duty is imposed, the companies that supply quality finished products using imported PTFE , would suffer.

**(b) M/s. Mach Polymers**

They have not imported PTFE originating in or exported from Russia during the period of investigation or at any other time.

**(c) Garg Associates Pvt. Ltd.**

- (i)** Two of the group companies, Garg Associates Pvt. Ltd., and Dhruv Electronics Pvt. Ltd., are involved in the design and manufacture of PIWC ( PTFE insulated wires and cables) and PTFE sleeves/tubing's, and procure large quantities of fine-powder PTFE resin mostly from Japan.
- (ii)** Garg Associates Pvt. Ltd., is perhaps the only exporter from India of PIWC to the developed markets of West Europe, UK, Canada, and New-Zealand at high value-addition. Dhruv Electronics Pvt. Ltd., is serving the domestic market, mainly in the area of defence electronics and aero-space besides professional industrial requirements in India.
- (iii)** PTFE is a versatile plastic with varied uses, the most common being in the area of moulding and lining, from the point of view of bulk. PTFE is used by forming the fine powder resin into very thin tape, wrapping the tape around silver or nickel-plated-copper conductors and fusing it at high temperature to make a wire. A similar process is used for making sleeves or tubing's.
- (iv)** Since the kinds of PTFE used for different applications vary widely in price, investigation for dumping should also take into consideration the different grades.
- (v)** The motives of the petitioner are suspect. The pricing of their products have never been based on professional considerations related to cost of production. Nor is the quality of PTFE or its

consistency of any major concern to them. The prices have often been arbitrarily increased by HFL in the past, based on the landed cost of imported PTFE by taking into account the prevailing import duty structure and the dollar exchange rate.

- (vi) This respondent had to raise a demand for compensation for poor quality of PTFE supplied by the petitioner. When their efforts to upgrade HFL quality did not produce satisfactory results, further purchases from the petitioner were stopped from July 1995.
- (vii) The respondent is now dependent exclusively on imported material.
- (viii) The Russian manufacturer need not be penalised for low production costs, even while M/s. HFL do not have any incentive to reduce cost of operations.

**(d) Dip-Flon Engineering & Co.**

- (i) This respondent has stated that they have not imported PTFE originating from Russia during the period of investigation.
- (ii) As a processor of PTFE they would like free play of competition between imported PTFE resin and that manufactured by HFL.
- (iii) They had to resort to imports as the quality of resin supplied by HFL was unsuitable for various processes and the petitioner was unable to meet their requirements on time.
- (iv) It is felt that in view of globalisation and resultant competitive pricing and the availability of a wide variety of options for consumers, it would be counter productive to impose anti-dumping duties or restrict the imports of the product under investigation.

**(e) Plastic Products Engineering Company**

- (i) This respondent has not imported PTFE from M/s Halogen Joint Stock Company during the period investigated
- (ii) From the point of view of the consumer, M/s HFL being the sole manufacturer of PTFE should not be allowed to attain the status of a monopoly through the acceptance of their contention and by imposition of anti-dumping duties.
- (iii) The petitioner does not produce all grades of PTFE and hence any measure to restrict imports would be counterproductive.

**(f) Mechanical Packing Industries Ltd.**

- (i) Free import of PTFE has been allowed by the Government in the interest of indigenous consumers giving due weightage to various aspects like quality, availability and fitness for end-use. The petitioner is not in a position to offer the various grades of PTFE resin available in the international market to meet specific application areas/end-users requirements. Although most of the requirements are sourced from M/s HFL, it is often found that there is a lack of consistency in the quality of resin supplied by them.
- (ii) This respondent caters to the requirements of the domestic industry as well as to the export market. For the purpose of exports, consistency in quality is essential, leading thereby to imports of PTFE resin.
- (iii) The landed cost of imports of PTFE resin from different sources has generally been more expensive than the cost of purchase from M/s HFL Ltd. It is reiterated that such expensive imports are essential, keeping in view the quality factor for the export market as well as the end-use application.

- (iv) There is no large scale dumping of Russian PTFE into the Indian market and therefore there is no case for the levy of anti-dumping duty on PTFE resin. Levy of anti-dumping duty may lead to an adverse impact on the foreign exchange inflow by reducing exports due to non-competitive price and unacceptable quality.

#### **4. Exporters Views**

##### **Halogen Joint Stock Company**

This exporter has not responded to the Authority's request for information as per the prescribed questionnaire and within the time limit allowed. However vide their letter to the Authority dated 1/4/99 they have raised the following points:

- (i) The arguments of the petitioner are incorrect and groundless.
- (ii) The petitioner has erroneously concluded that normal value of PTFE in Russia is much higher than the export price to India.
- (iii) The statement of the petitioner that Russian producers charge salaries, wages and commercial interest to the "state" is absolutely groundless as is their statement that the number of personnel in Russian enterprises is "less than half" as compared with that of India.
- (iv) That JSC Halogen is a major manufacturer of PTFE in Russia is not factually correct. They have made irregular and insignificant quantities of deliveries to India.
- (v) It is unnecessary for HFL to compete with VAO Techmashexport (Moscow) as the latter is a trading organization, which has never manufactured PTFE.

- (vi) For comparison of prices, the petitioner has chosen the biggest producers of PTFE such as Dupont (USA) and Daikin (Japan) but these producers additionally include the cost of technical service (handling costs) to the price of PTFE resin.
- (vii) The prices of PTFE may differ significantly depending on the technology used for production and on post-treatment or further processing. For comparison of prices, references made to moulding PTFE powder of Dupont (USA) and Fluoroplast-4PN (Russia) are not in order because these grades of PTFE differ on account of particle size. They have different applications on further processing and consequently have different prices.
- (viii) The price of PTFE depends also on the type of packaging used. The moulding powder of Dupont is packed in metal cardboard or polystyrene drums, while Fluoroplast-4PN (JSC Halogen) is packed in paper sacks.
- (ix) In view of the reasons cited above and on getting acquainted with the documents presented, this exporter did not find it necessary to participate in the present investigation.

#### **D. EXAMINATION OF THE ISSUES RAISED**

5. The submissions made by the petitioner and importers have been examined and dealt with at appropriate places hereunder.

#### **E. PRODUCT UNDER INVESTIGATION**

6. The product under consideration in the present investigation is Poly tetra fluoro ethylene (PTFE) in suspension and emulsion grades:

PTFE is an engineering thermoplastic with outstanding properties such as chemical inertness, low co-efficient of friction, heat resistance, excellent electrical insulation properties, non-toxic, non-inflammable and weathering resistance. Due to these characteristics PTFE finds many applications in chemical, mechanical, electrical and electronics industries.

PTFE has varied uses the most common being in the areas of moulding and lining. In the mechanical industry, PTFE is used in the manufacture of bearings, compression rings, slide-blocks (to take up expansion in large metallic constructions, e.g., bridges, pipelines, heat exchangers, horizontal reservoirs, etc.), stuffing boxes on rotating or alternating shafts of pumps, compressors, autoclaves valves, etc. PTFE is also used in the manufacture of unsintered tape and in the printing and textile trade for coating of rollers to make the surfaces anti-stick.

In the electrical industry, wire PTFE sleeved by extrusion and tape wound cables are being used in precision industries. More general use is being made of PTFE in aviation, electronic computers radar etc. It is very generally used in making connection components co-axial plugs, supports for electronic tubes and aerials, cross-bars for high tension conductors, insulation components etc.

Seals and joints are now one of the most popular fields of application of PTFE in the chemical industry. Apart from this PTFE is equally effective for pipe-lines, valves, pumps etc.

PTFE is classified under Chapter 39 of the Customs Tariff Act, 1975, under tariff classification H.S. Code No. 3904.61. The classification is however indicative only and in no way binding upon the scope of the present investigations.

## F. LIKE ARTICLES

7. PTFE is produced and sold in different grades. There is however no significant difference in terms of process, equipment or technology for the production of different grades of PTFE which is manufactured via the same chemical route the world over. For obtaining different grades of PTFE, different kinds of finishing operations are employed which are mostly in batches. Therefore, PTFE manufactured by the domestic industry and in the country subject to this investigation are alike in their essential physical and technical characteristics.

In order to establish that PTFE produced by the domestic industry is a like article to that exported from Russia, characteristics such as technical specifications, manufacturing process, functions and uses and tariff classification have been considered. Some interested parties have stressed on the quality differences between the imported PTFE and that manufactured by the petitioner. However, the basic manufacturing process, applications and overall use of the product are similar. There is a high degree of interchangeability and consequently of competition between the imported product and that manufactured by the petitioner being the subject matter of this investigation.

There is no argument disputing that PTFE produced by the domestic industry in various grades has characteristics closely resembling the imported material and is substitutable by PTFE imported from the subject country both commercially and technically. PTFE produced by the domestic industry has been treated as like article to the product exported from Russia, within the meaning of Rule 2(d).

## G. DOMESTIC INDUSTRY

8. The petition has been filed by M/s. Hindustan Fluorocarbons Ltd., Hyderabad, who is the only manufacturer of this product in India. The Ministry of Chemicals and Fertilisers has also confirmed the single-producer status of the petitioner. The petitioner therefore constitutes

domestic industry and has the required standing to file the present petition under the Rules.

## H. DUMPING

9. Under Section 9A(1), normal value in relation to an article means:

The comparable price in the ordinary course of trade, for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or

- (i) When there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory such sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either:
- (a) comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory or an appropriate third country as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or
- (b) the cost of production of the said article in the country of origin alongwith reasonable addition for administrative, selling and general costs and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section (6);

Provided that in the case of import of the article from a country other than the country of origin and where the article has been merely transshipped through the country of export or such article is not produced in the country of export or there is no comparable price in the country of export, the normal value shall be determined with reference to its price in the country of origin.

10. The Authority sent a questionnaire to the known exporter from the subject country in terms of the section cited above. However, the exporter did not respond to the request for information as per the questionnaire but raised some issues in a letter addressed to the Authority dated 1/4/99. They also expressed their unwillingness to participate in this investigation. Therefore there are no claims made by the exporter with regard to normal value and export price. The Authority has therefore been constrained to rely upon constructed price and best available information with regard to normal value and export price respectively, as provided by the petitioner and as available in official statistics.

## **I.EXAMINATION OF NORMAL VALUE AND EXPORT PRICE BASED ON CONSTRUCTED VALUE AND AVAILABLE INFORMATION BY THE AUTHORITY**

11. The Authority observes that the various grades of PTFE do not display any significant difference in terms of costs and are in the same range. It is stated by the petitioner that since the granular grade involves drying and energy required for drying, the cost of this additional energy is more or less equal to the additional additives cost for the aqueous solution emulsion grades. Hence the differential cost of production between granular and emulsion grades is marginal and can be treated as similar. The Authority has therefore grouped all grades described as product under consideration, for this investigation.

### **(i) NORMAL VALUE**

12. The Authority observes that the exporter from Russia has not responded to the questionnaire in the prescribed format and has not furnished information relating to normal value, export price, and dumping margin. In a letter to the Authority received beyond the

specified time-limit, they have raised some general issues and termed the petitioners views on normal value in Russia as groundless and incorrect. It is observed by the Authority that they have not attempted to substantiate their own arguments by responding to the questionnaire. Instead, they have expressed their unwillingness to participate in this investigation. The Authority therefore considers the exporter to be non-cooperative and has proceeded on best available information.

The petitioner has claimed the constructed cost of production in Russia based on data collection and interaction with industries in the US and other international manufacturers. While the exporter has contested this data, stating that it is only an approximation, they have not given any evidence of their normal value. In the circumstances the Authority has been constrained to determine the constructed cost based on the available information.

The normal value in Russia is therefore considered to be USD \*\*\*/kg or Rs \*\*\*/kg at an average exchange rate of 1USD=Rs 39.42/.

#### **(ii) Export Price**

13. The export price has been determined from DGCIS data after taking 1% as ocean freight, 0.29% as insurance charges and 0.5% as packing costs. After adjustments on these accounts the fob export price is Rs \*\*\*/kg or USD \*\*\*/kg.

#### **(iii) Dumping margin**

14. Considering the normal value at USD \*\*\*/kg and the ex-works export price at USD \*\*\*/kg, the dumping margin determined by the Authority comes to USD \*\*\*/kg (which is 4.82% of export price).

## **I. INJURY**

15. Under Rule 11 supra, Annexure-II, when a finding of injury is arrived at, such finding shall involve determination of the injury to the domestic industry, "taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on prices in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such article..." In considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like article in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increase, which otherwise would have occurred, to a significant degree.

Annexure II(iii) under Rule 11 supra further provides that in case where imports of a product from more than one country are being simultaneously subjected to anti-dumping investigations, the Designated Authority will cumulatively assess the effect of such imports, only when it determines that the margin of dumping established in relation to the imports from each country is more than two per cent expressed as a percentage of export price and the volume of the imports from each country is three per cent of the imports of the like article or where the export of the individual countries is less than three per cent , the imports cumulatively account for more than seven per cent of the imports of the like article , and cumulative assessment of the effect of imports is appropriate in light of the conditions of competition between the imported article and the like domestic article.

The Authority notes that the margin of dumping and quantum of imports from the subject country are more than the limits prescribed above.

For the examination of the impact of imports on the domestic industry in India, the Authority has considered such further indices having a bearing on the state of the industry as production, capacity utilisation, quantum of sales, stock, profitability, net sales realisation, the magnitude and

margin of dumping etc. in accordance wire Annexure II (iv) of the rules supra.

### **(a) Quantum of Imports**

16. The total imports of PTFE were 3,34,920 KG, 3,44,184 KG, and 4,75,528 KG during 1995-96, 1996-97 and 1997-98 (till June, 1998). Thus the increase was 2.76% in 1996-97 over 1995-96 and 38% in 1997-98 (till June, 1998) over 1996-97. The increase was 41.9% in 1997-98 over 1995-96. Thus the quantum of imports have gone up significantly during the period of investigation.

The quantum of imports from Russia was 24,130 KG, 7,000 Kg and 40,665 KG during 1995-96, 1996-97 and 1997-98 (till June, 1998). The quantum of imports have gone up by 68% in 1997-98 over 1995-96 and by 480% in 1997-98 over 1996-97. There was however a decline in imports in 1996-97 over that of 1995-96.

The quantum of imports from other countries was 3,10,790 KG, 3,37,184KG and 4,34,863 KG during 1995-96, 1996-97 and 1997-98 (till June, 1998) respectively. The share of Russia in total imports was 7.76%, 2.07% and 9.35% in 1995-96, 1996-97 and 1997-98, respectively.

### **(b) Production and Capacity Utilisation**

17. The production capacity, actual production and capacity utilisation of the petitioner was as follows: -

Year	Capacity (MT)	Production (MT)	Capacity Utilisation
1995-96	500	385	77
1996-97	500	392	78

1997-98	500	259	52
POI	625	333	53.28

The capacity utilisation of M/s HFL was 77%, 78% and 52% in 1995-96, 1996-97 and 1997-98 respectively and 53.28 in the period investigated. Thus the capacity utilisation declined steeply during the period of investigation from a level of 78% in the previous year. Decline in capacity utilisation has been attributed to drop in sales. There has been no change in installed capacity, which remains at the same level.

### **(c) Sales and Market Share**

18. It is observed that the demand for PTFE was 746 MT, 705 MT and 797 MT in 95-96, 96-97 and 97-98 respectively. The share of imports in total demand was 44.7%, 48.7% and 59.5% in 95-96, 96-97 and 97-98 respectively. The share of the petitioner was 55.2%, 51.2% and 40% in 95-96, 96-97 and 97-98 respectively. Thus the share of imports have been rising in total demand whereas the share of Indian industry has been declining. The quantum of sales made by the petitioner declined from 412Mt in 1995-96, to 361 Mt in 1996-97 to 321.88 during the period of investigation (April'97 to June'98). The selling prices in Rs per kg were \*\*\*, \*\*\*, \*\*\* in 95-96, 96-97 and 97-98. The sale of PTFE below cost of production during the period of investigation resulted in heavy loss of profit to the petitioner.

### **(d) Closing Stocks**

19. It is observed that the closing stocks of the petitioner were 54 MT, 85 MT and 69 MT during 95-96, 96-97 and 97-98. Closing stocks went up by 36% in 96-97 over 95-96 and by 21% in 97-98 over that of 95-96. The quantum of closing stocks declined in the period investigated over that of the previous year but nevertheless remained high.

### **(e) Price undercutting and price depression**

20. The petitioner has stated that imports from the subject country have been undercutting the prices of the like article being sold by the domestic producer. It is seen from official statistics that Russian PTFE was priced at Rs \*\*\*/kg (fob) or USD \*\*\* after adjustments on account of freight, insurance and packing charges. This is less than the constructed cost of production in Russia, which is estimated at Rs \*\*\*/kg or USD \*\*\*/kg. This price is below the unit cost of production of the petitioner during 1995-96, 1996-97 and for the period of investigation which was at Rs \*\*\*/kg, Rs \*\*\*/kg and Rs \*\*\*/kg respectively. The petitioners unit selling prices/kg during 1995-96, 1996-97 and 1997-98(till June'98) were Rs. \*\*\*, Rs \*\*\*/kg and Rs \*\*\*/kg. It is seen that at these price levels, while the petitioner had earned profits of Rs 55.59 lacs and Rs 17.56 lacs during 1995-96 and 1996-97 respectively, it incurred losses amounting to Rs (\*\*\*)/kg during the period of investigation. Losses suffered by the petitioner were on account of low capacity utilisation, poor sales and high closing stocks. The net profit/(loss) for 1997-98 in Rs in lacs was Rs. (1226.11). It is seen that at a price of Rs \*\*\*/kg during the period of investigation, the petitioner was unable to recover its fair selling price. It is stated that in order to maintain its market share, the petitioner has been compelled to sell its material comparable with the landed price of the imported product. By offering competitive prices, the petitioner had to sell its product at considerable loss.

### **(f) Insufficient funds for investment in R&D**

21. Due to the price pressure exerted through the dumping of PTFE by Russian suppliers, the petitioner was compelled to match the landed price of imported PTFE and was therefore unable to generate surplus funds. This was the main reason behind insufficient funds for purposes of further investment in R&D and application development after the period of investigation.

## K. CONCLUSION ON INJURY

22. In view of the foregoing it is observed that:-

- (a) the quantum of imports from the subject country have increased in absolute terms and in relation to production and consumption in India;
- (b) the market share of the petitioner has gone down while that of imports has increased;
- (c) the capacity utilisation of the petitioner has gone down ;
- (d) the petitioner has been forced to sell at prices below its fair selling price resulting in losses;
- (e) imports are undercutting the prices of the domestic industry;
- (f) the domestic industry is left with substantial closing stocks.

## L. CAUSAL LINK

23. The Authority holds that the material injury to the domestic industry has been caused by imports from the subject country. The increase in the market share of imports from Russia resulted in the decline in the market share of the petitioner and undercut the prices of the domestic product forcing the domestic industry to sell below its fair price which resultantly, the domestic industry was unable to recover. The material injury to the domestic industry was therefore caused by the dumped imports from the subject country.

## M. INDIAN INDUSTRY'S INTEREST & OTHER ISSUES

24. The purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate dumping which is causing injury to the domestic industry and to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country.

25. It is recognised that the imposition of anti-dumping duties might affect the price levels of the products manufactured using the subject

goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products. However, fair competition in the Indian market will not be reduced by the anti-dumping measures, particularly if the levy of the anti-dumping duty is restricted to an amount necessary to redress the injury to the domestic industry. On the contrary, imposition of anti-dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of acrylic fibre. Imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the subject country in any way, and therefore would not affect the availability of the product to the consumers.

26. To ascertain the extent of anti-dumping duty necessary to remove the injury to the domestic industry, the Authority relied upon reasonable selling price of PTFE in India for the domestic industry, by considering the optimum cost of production at optimum level of capacity utilisation for the domestic industry.

#### **N . LANDED VALUE**

27. The landed value of imports is determined on the basis of export price of PTFE, determined as detailed above in the para relating to dumping, after adding the prevailing level of customs duties and one per cent landing and two per cent handling charges.

#### **O. CONCLUSIONS**

28. It is seen after considering the foregoing that:

- (a) PTFE described under para 6 originating in or exported from Russia has been exported to India below normal value, resulting in dumping;
- (b) the domestic industry has suffered injury;
- (c) injury has been caused by imports from the subject country.

29. It is considered whether a duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury. Landed price of the imports for the

purpose, was compared with the fair selling price of the domestic industry, determined for the period of investigation. Wherever the difference was less than the dumping margin, a duty lower than the dumping margin is recommended. Accordingly, it is proposed that provisional anti-dumping duties be imposed, from the date of notification to be issued in this regard by the Central Government, on all grades of PTFE originating in or exported from Russia falling under customs sub-heading 3904.61 of the Customs Tariff Act, pending final determination.

<u>Country</u>	<u>Name of the Producer</u>	<u>Amount</u>
<u>1.</u>	<u>2.</u>	<u>3. (Rs)/MT</u>
Russia	JSC Halogen & all other producers/exporters	Rs 2990

30. Landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined by Customs under the Customs Act, 1962 and all duties of customs except duties levied under Sections 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the Customs Tariff Act, 1975.

## P. FURTHER PROCEDURE

31. The following procedure would be followed subsequent to notifying the preliminary findings:
- The Authority invites comments on these findings from all interested parties and the same would be considered in the final findings;
  - Exporters, importers, petitioner and other interested parties known to be concerned are being addressed separately by the Authority, who may make known their views, within forty days of the despatch of this notification. Any other interested party may also make known its views within forty days from the date of publication of these findings.
  - The Authority would provide opportunity to all interested parties for oral submissions.
  - The Authority would disclose essential facts before announcing the final findings.

RATHI VINAY JHA, Designated Authority